अनुक्रमांक / Roll No.

परीक्षार्थी अपना अनुक्रमांक यहाँ लिखें।
Candidate should write his/her Roll No. here

कुल प्रश्नों की संख्या : 10
Total No. of Questions : 10

मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 08
No. of Printed Page : 08

M-2020-PAPER

पेपर-5 (हिन्दी)

19.09.2020

पूर्णांक : 300
Total Marks : 300

1. इस प्रश्न-पत्र में कुल दस प्रश्न है। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
2. प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित है।
3. प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए, जिसका चयन आपने आवेदन पत्र में किया है। किसी अन्य माध्यम में लिखे गये उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेगा। सभी 03 प्रश्न करना अनिवार्य है।
4. जहाँ शब्द सीमा दी गई है उसका अवश्य पालन करें।
5. प्रश्न पत्र के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार दें। एक ही प्रश्न के विभिन्न भागों के उत्तर अनिवार्य रूप से एक साथ ही लिखे जायें तथा उनके बीच अन्य प्रश्नों के उत्तर न लिखे जायें।

1. इन लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 50 शब्दों में एक या दो पंक्तियों मे दीजिए। (20 × 3 = 60)

(a) द्वित्व वर्ण से आप क्या समझते हैं?

(b) प्रारूप लेखन से क्या आशय हैं?

(c) संज्ञा के प्रकार लिखिए।

(d) पश्चिमी हिन्दी के अंतर्गत बोली जाने वाली तीन बोलियों के नाम लिखिए।

(e) 'मुहावरा' और लोकोक्ति में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

(f) सन् 1957 में बनी संसदीय राजभाषा समिति के अध्यक्ष कौन थे।

(g) बहुव्रीहि व कर्मधारय समास में अंतर बताइए।

(h) संविधान के किस अनुच्छेद के अंतर्गत राजभाषा समिति तथा आयोग का प्रावधान हैं ?

(i) प्रविशेषण से आप क्या समझते हैं ? उदाहरण सहित समझाइये।

(j) तत्सम् तथा तद्‌भव शब्दों की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

(k) संयुक्त व्यंजन से क्या तात्पर्य हैं ?

(l) देवनागरी लिपि की कोई तीन विशेषताएँ बताइए।

(m) हिन्दी भाषा में प्रयुक्त लाघव चिन्ह, योजक तथा उद्धरण चिन्ह को समझाइए।

(n) प्रतिवेदन से क्या अभिप्राय हैं ?

(o) लिपि की परिभाषा लिखिए तथा आर्य परिवार की किन्हीं दो भाषाओं के नाम बताइए।

(p) राजभाषा से आप क्या समझते है।

(q) हिन्दी भाषा का विकास क्रम लिखिए।

(r) राजभाषा नियम के अंतर्गत क्षेत्र 'क' में आने वाले किन्हीं तीन राज्यों के नाम लिखिए ।

(s) मानक भाषा की परिभाषा लिखिए।

(t) संक्षेपण किसे कहते हैं ?

2. निम्नलिखित गद्यावतरण का हिन्दी से अंग्रेजी भाषा में अनुवाद कीजिए - (20)

अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत क्षेत्र में संदेश प्रसारण के प्रत्येक परवर्ती साधन ने किसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए इस प्रगतिशील संसार में जन्म लिया। भाषण देना आवश्यक हो गया जब विचार आदिकाल की आवश्यकता से आगे बढ़े होंगे और उससे भी अधिक व्यापक अभिव्यक्ति की आवश्यकता हुई होगी, जो हाव-भाव से पूर्ण होती है। आलेखन का सामाजिक वर्ग, पुजारियों, नेताओं, चिन्तन और साहित्य के उषाकाल में विकास के साथ जन्म हुआ। मुद्रण कला पुनः जागरण के ज्ञान और विचारधारा का एक माध्यम बन गई। आधुनिक विश्व के जन्म का पूर्ण संकेत भी इसी में मिला। प्रसारण एवं विद्युत एवं संदेश प्रसारण विश्व की अत्यावश्यक माँग को पूरा करने के लिए हुआ। उसका विनाश हो जाता, यदि एक संगठन, जो इसके मानवीय एवं वित्तीय एकता को प्रकट करने की क्षमता रखता। विचार एवं सूचना के शीघ्र आदान-प्रदान की आवश्यकता, प्रत्येक राष्ट्र से परिचित होने के लिए उस देश के व्यक्तियों और उनकी आदतों को जानने की आवश्यकता।

<u>**अथवा**</u>

राजनैतिक और आर्थिक कारणों से जातियों की मर्यादाएँ घटी बढ़ी हैं। राजकीय शक्ति पा जाने के बाद छोटी समझी जाने वाली जाति भी उत्तम अत्रिय मान ली गई है। और आर्थिक उन्नति के साथ शूद्र का दर्जा बढ़कर वैश्य का दर्जा बन गया है। इनके उदाहरण बहुत हैं। वस्तुतः इन कारणों से जातियों की सामाजिक मर्यादा जितनी बढ़ी है, उतनी धार्मिक आन्दोलनों के कारण एकदम नहीं। ऐसा लगता है कि भारतवर्ष की शतादिक जातियों को कल्याण मार्ग की ओर अग्रसर करने का एक मात्र तरीका यह है कि उनकी राजनीतिक गरिमा और आर्थिक स्वाधीनता का संचार होगा, उसी दिन वह वास्तव में मुक्त हो सकेगा। भगवान की सन्तान होने का उसका दावा पहले स्वीकृत हो चुका है, परन्तु उस दावे का कोई विशेष लाभ नहीं हुआ।

3. निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। (15)

We do, admit that there are many kinds of evils prevailing in the country today. Corruption, bribery and malpractices are rampant everywhere- And not only ordinary people but most responsible administrators are also involved in this dirty quagmire. It is essential to put an end to these evils. But we want to urge upon our students and young men that this can be done only through constructive activities and not through destructive ones. The fact is that as far as possible, students should not disturb their studies by involving themselves in the dirty game of politics etc. Learning and knowledge are the greatest assets of man. By losing them, he will get nothing but only kicks. Even then if our students and youngmen have a desire to reform the nation we are prepared to welcome them with great pleasure and pride-

Or

Curiosity is the natural tendency ofman and the enjoyment of pleasure of his instinctive desire. Both these tendencies are innate and inborn even in a diehard materialist. If they are not sublimated satisfactory, they become a cause of disbelief in the man on the one hand and produce in him sense of fear] disappointment and depression on the other. This may be called an aberrant state of man generally speaking, the man of today is more unsatisfied, more excited and more distressed. This aberration causes many mental and organic diseases. If it is minutely observed] this aberration appears to be the root cause of nervous disorder of today. Both the diagnosis and treatment of this aberration are difficult. It is because of this that man's humanity has been over shadowed by the devilism in him and the irony of it is that the man, for his outward gratification, is engaged to change the very definition of moral and human values.

4. निम्नलिखित गद्यांश का एक-तिहाई शब्दों में संक्षेपण कीजिए तथा रेखांकित पंक्तियों का भाव पल्लवन अपने शब्दों में कीजिए। (15)

रामचरितमानस के उत्तरकांड में गरूड़ ने काकभुशुण्डि से सात प्रश्न पूछे हैं। वे प्रश्न मानवीय अस्तित्व के बुनियादी प्रश्न है और उनके उत्तर भी उतने ही अर्थवान। जितने संक्षिप्त प्रश्न उतने ही सारगर्भित उत्तर। जैसे तुलसी अपने जीवन भर के अनुभवों का निचोड़ दे रहे हों। गरूड़ का एक प्रश्न है – 'बड़ दुख कवन, कवन सुख भारी' अर्थात् सबसे बड़ा कवि ही लिख सकता था। वे कहते हैं– 'नाहि दरिद्र सम दुख जग माहीं, संत मिलन सम सुख जग नहीं' अर्थात् दारिद्रय के समान कोई दुख नहीं और संत मिलन के समान कोई सुख नहीं है। विचार करें कि यदि दरिद्र सबसे बड़ा दुख है तो उसका उल्टा अर्थात् आर्थिक सम्पन्नता को सबसे बड़ा सुख कहना चाहिए। मगर तुलसी ऐसा नहीं कहते हैं।

अथवा

प्रकृति अपने अनन्त रूपों में हमारे सामने आती है– कहीं मधुर, सुसज्जित या सुन्दर रूप में, कहीं रूखे, बेडौल या कर्कश रूप में, कहीं भव्य, विशाल या विचित्र रूप में, और कहीं उग्र, कराल या भयंकर रूप में। सच्चे कवि का हृदय उसके उन सब रूपों में लीन होता है। उसके अनुराग का कारण अपना खास सुख–भोग नहीं, बल्कि चिर साहचर्य द्वारा प्रतिष्ठित वासना है। जो केवल प्रफुल्ल प्रसून प्रसाद के सौरभ संचार, मकरन्द लोलुप मधुकर के गुंजार, कोकिल कूजित निकुंज और शीतल सुखस्पर्श समीर की ही चर्चा किया करते हैं, वे विषयी या भोगलिप्सु हैं। इसी प्रकार जो केवल मुक्ताभास हिम–बिन्दु मण्डित मरकताभ शाकदलजाल, अत्यन्त विशाल जल–प्रपात की

गम्भीर गति से उठी हुई सीकर निहारिका के बीच विविध वर्ण स्फूरण की विशालता, भव्यता और विचित्रता में ही अपने हृदय के लिए कुछ पाते हैं, वे तमाशबीन हैं, सच्चे भावुक या सहृदय नहीं। प्रकृति को साधारण, असाधारण सब प्रकार के रूपों को रखने वाले वर्णन हमें वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति इत्यादि संस्कृत के प्राचीन कवियों में मिलते हैं। पिछले खेमें के कवियों ने मुक्तक रचना में तो अधिकतर प्राकृतिक वस्तुओं का अलग-अलग उल्लेख केवल उद्दीपन की पुष्टि से किया है। प्रबन्ध रचना में थोड़ा बहुत संश्लिष्ट चित्रण किया है। वह प्रकृति की विशेष रूप विभूति को लेकर ही।

5. निम्नलिखित हिन्दी शब्दों में किन्हीं 5 के अंग्रेजी पारिभाषिक रूप लिखिए। (15)

1. अभियोग **2.** प्रतिभूति **3.** पूर्वाग्रह **4.** अध्यादेश **5.** पदोन्नति

6. अन्तरिम **7.** नियंत्रक **8.** अधिनियम **9.** न्यायपालिका **10.** उपभोक्ता

अथवा

5. निम्नलिखित अंग्रेजी ाब्दों में से किन्हीं पाँच के हिन्दी पारिभाषिक रूप लिखिए।

1. Executive **2.** Agent **3.** Civil Disobedience

4. Cabinet Secretariat **5.** Capital **6.** Interference

7. Offence **8.** Nationalisation **9.** Valid

10. Corporation

6. स्वयं को जिला कलेक्टर इन्दौर मानते हुए एक कार्यालय आदेश निर्गित करें जिसमें कोविड-19 के चलते संपूर्ण बाजार सुबह 8:00 बजे से 2:00 बजे तक खुलने की अनुमति दे, आपातकालीन सेवाओं को छोड़कर- **(15)**

अथवा

सर्वधर्म सम्मेलन पर संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत कीजिए।

7. निम्नलिखित में से किन्हीं 5 मुहावरें/कहावतों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग करें - (15)

1. मेढ़की को जुकाम होना

2. घी के दिए जलाना

3. गूलर का फूल होना

4. हाथ कंगन को आरसी क्या

5. सौ चूहे खाके बिल्ली चली हज को

6. ईंट से ईंट बजाना

7. गढ़े कुम्हार भरे संसार

8. घड़ी में तोला घड़ी में माशा

9. घर-घर मटियारे चूल्हें

10. अक्ल का चरने जाना

8. निम्नलिखित में से किन्हीं 5 के उत्तर दीजिए - **(15)**

1. अठन्नी शब्द का समास विग्रह कीजिए।

2. 'तपोधन' का समास विग्रह कीजिए।

3. 'वस्त्र' शब्द के 3 पर्यायवाची शब्द लिखिए।

4. 'कृष्णार्पण' का समास विग्रह कीजिए।

5. 'कमल' ब्दे के 3 पर्यायवाची लिखिए।

6. 'उत्कर्ष' का विलोम शब्द लिखिए।

7. 'सामिष' का विलोम शब्द लिखिए।

8. 'सपूत' का तत्सम शब्द लिखिए।

9. 'तदनन्तर' का संधि विच्छेद कीजिए।

10. 'नाविक' का संधि विच्छेद कीजिए।

9. **निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए।** **(20)**

मुद्रा का अपना कोई प्रयोग नहीं है। उसका लाभ तभी है जबकि उसके बदले में अन्य वस्तुएँ या सेवाएँ ली जा सकें। वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा के बढ़ने-घटने के साथ-साथ मुद्रा-प्रवाह में भी बढ़ाव या घटाव हो सकता है।

अत्यधिक मुद्रा में बहुत कम चीजें आएँ तो मुद्रास्फीति बढ़ती है। 'मुद्रास्फीति' का अर्थ हैं- वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य में वृद्धि। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि मुद्रास्फीति बढ़ने के समय सभी वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य बढ़ता है अपितु वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य में वृद्धि कुछ इस प्रकार होती है कि उसका कुल मूल्य-स्तर बढ़ जाता है। मुद्रास्फीति तब होती है जब निश्चित समय काल में मूल्य बढ़ते हैं और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं। अनिवार्य वस्तुएँ एवं सेवाएँ जैसे खाद्य पदार्थ, दुग्ध सामग्री और तेलीय बीज, साबुन और डिटर्जेन्ट, कीटनाशक आदि मुद्रास्फीति से सर्वाधिक प्रभावित होती हैं।

मुद्रास्फीति की मूल जड़ किसी देश में वस्तुओं और सेवाओं की कुल माँग और देश के कुल उत्पाद के बीच उत्पन्न असंतुलन है। जब सरकारी खर्च आय से अधिक हो जाते हैं तो सरकार देश के केन्द्रीय बैंकों से मुद्रा उधार लेती है। निजी क्षेत्र भी अपने कुल खर्ची के बढ़ने और स्त्रोत के कम होने पर बैंकों से राशि उधार लेता है। जब देश में आयात की अपेक्षा निर्यात में वद्धि होती हैं तो बदले में देश विदेशी मुद्रा अर्जित करता है। विदेश में भारतीय प्रवासी अपनी आय वापस भारत में भेजते हैं तो उससे भी मुद्रा-पूर्ति में बढ़ोत्तरी होती है। मुद्रा-पूर्ति में वद्धि तब भी होती है जबकि 'निष्क्रिय' राशि सक्रिय राशि में परिवर्तित हो जाती है। उदाहरणतः यदि आपातकालीन स्थितियों के लिए संजोकर रखी गई निष्क्रिय राशि को मालिक अथवा उपभोक्ता कोई वस्तु अथवा सम्पत्ति क्रय करके प्रयोग में लाये।

जब मुद्रा की पूर्ति उपर्युक्त घटकों के कारण बढ़ जाती है तो लोगों को वस्तुओं और सेवाओं की माँग पूरी करने के लिए पर्याप्त मुद्रा-राशि की आवश्यकता होती है। परन्तु ऐसी स्थिति में उत्पादन नहीं बढ़ता क्योंकि उत्पादन में प्रयुक्त सभी घटक जैसे मानव संसाधन, प्रौद्योगिकी आदि पहले से ही पूर्ण रूप से माँग को पूरा करने के लिए रोजगार में लगे होते हैं। मशीनरी, पूँजी और प्रौद्योगिकी की कमी, विद्युत की कीम, परिवहन और कुशल मजदूरों की कमी के कारण भी उत्पादन नहीं बढ़ पाता। इसके परिणामस्वरूप अधिक माँग में होने वाली वस्तुओं और सेवाओं की माँग अधिक और पूर्ति कम होती है। इस प्रकार मुद्रास्फीति बढ़ती है।

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

2. मुद्रा का लाभ कब उठाया जा सकता हैं ?

3. मुद्रास्फीति का क्या अर्थ है ?

4. मुद्रा पूर्ति में वद्धि कब होती है ?

5. किस प्रकार का असंतुलन मुद्रास्फीति का कारण है ?

अथवा

कोई भी कवि अपने युग की अवहेलना नहीं कर सकता। उसकी रचना में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक प्रवृत्तियों की झलक आये बिना नहीं रहती। काव्यकार चाहे किसी भी युग का कथानक ले, परन्तु वह अपने युग की विचारधाराओं, मान्यताओं और धारणाओं से, पूर्णत: प्रभावित होता है। अत: उसके काव्य में उनका मुखरित हो उठना स्वाभाविक है। मैथिलीशरण गुप्त तो अपने युग के वैतालिक कहलाते हैं, इसलिए उनकी कृतियों में आधुनिक जन-जीवन की झलक मिलना नितान्त आवश्यक है। गुप्तजी प्रत्येक कृति में हम युग की प्रमुख-प्रमुख प्रवृत्तियों एवं मनोवृत्तियों का उल्लेख देख सकते हैं। 'भारत-भारती' ही को लें, जिसने इन्हें राष्ट्रकवि बना दिया। गुप्तजी की प्रारम्भिक रचनाओं में हिन्दू राष्ट्रीयता के दर्शन होते हैं, किन्तु धीरे-धीरे वे भारतीय राष्ट्रीयता के समर्थक बन गए, जाति और धर्मगत भेद सब तिरोहित हो गये। भारत के निवासी, चाहे वे सिक्ख हों, चाहे इसाई, मुसलमान हों, चाहे जैन, कोई हों, सब भारत माँ के लाल हैं और सब भाई-भाई हैं। इस तरह गुप्तजी संकुचित संकुचित हिन्दू राष्ट्रीयता के विशुद्ध राष्ट्र प्रेम की ओर बढ़े और उनका वही प्रेम मानव प्रेम में परिवर्तित हो गया। उनके काव्य में विश्व की मंगल कामना छिपी है। वे राष्ट्रीयता से मानवता के पुजारी बन गए।

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

2. मैथिलीशरण गुप्त को 'युग के वैतालिक' क्यों कहा गया ?

3. लेखक के अनुसार कोई भी कवि अपने युग की अवहेलना नहीं कर सकता ?

4. गुप्त जी के काव्य में क्या सद्भावना छिपी हुई हैं ?

5. किसी काव्यकार की रचना में उसके युग की किन-किन प्रवत्तियों की झलक देखने को मिलती है ?

10. भारती विद्या मंदिर के प्राचार्य की ओर से दयानंद विद्यालय के प्राचार्य को पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि पद को स्वीकार करने हेतु एक अर्द्धशासकीय पत्र लिखिए ? **(15)**

अथवा

अनुस्मारक किसे कहते है? विशेषताएं बताते हुए प्रारूप प्रस्तुत कीजिए ?